राष्ट्रीय मीडिया डायलॉग के निष्कर्ष

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एवं राजयोग एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन के मीडिया प्रभाग द्वारा ज्ञान सरोवर, माउण्ट आबू में 14 से 16 जून, 2009 तक 'मीडियाकर्मियों का आन्तरिक सशक्तिकरण' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय मीडिया डायलॉग आयोजित किया गया। इसमें प्रिन्ट, इलेक्ट्रानिक एव सायबर मीडिया से जुड़े देश के विभिन्न प्रान्तों एवं सिंगापुर के चार सौ से अधिक विशिष्ट मीडियाकर्मियों व मीडियाशिक्षाविदों ने भाग लिया। यह डायलॉग उदघाटन सत्र सहित चार खुले सत्रों, चार ग्रुप डायलॉग, पांच आध्यात्मिक व्याख्यान तथा ध्यान योग सत्रों में सम्पन्न हुआ। इस दौरान मीडियाकर्मियों एवं मीडिया शिक्षाविदों की गहन एवं व्यापक चर्चा एवं परिचर्चा में निम्नलिखित निष्कर्ष निकले-

अः मीडियाकर्मियों में धन, भौतिक साधनों, तकनीक, सम्मान एवं पहिचान की दृष्टि से पिछले कुछ समय में अद्वितीय सशक्तिकरण हुआ है। लेकिन प्रायः इसका दुरूपयोग संकीर्ण एवं निहीत स्वार्थों की आपूर्ति के लिए किये जाने के कारण वास्तविक सशक्तिकरण का लुप्त होना चिन्ता का विषय बन गया है।

बः सच्चे आन्तरिक सशक्तिकरण का अभिप्राय मीडियाकर्मियों की चेतना, सोच, दृष्टिकोण, मूल्यों व चरित्र को नकारात्मकता से सकारात्मकता की ओर ले जाना है, ताकि वे निजी स्वार्थों से उपर उठकर व्यापक दृष्टिकोण से सकारात्मक सोच विकसित कर पायें।

सः मीडियाकर्मियों के जीवन में गुणवत्ता से परिपूर्ण परिवर्तन के लिए सत्यता, सहनशीलता, विश्वसनीयता, धैर्य, साहस, प्रतिबद्धता, ईमानदारी, निष्पक्षता, समानता, न्याय जैसे उन गुणों का समावेश आवश्यक है, जो भारत की सर्वमान्य प्राचीन आध्यात्मिक बौद्धता, राजयोग ध्यान, सकारात्मक एवं स्वस्थ जीवनशैली पर आधारित हो।

दः ऐसे सशक्त मीडियाकर्मी मूल्य आधारित प्रकाशनों व कार्यक्रमों के माध्यम से शान्ति, अहिंसा, एकता, भाईचारे और प्रसन्नता से परिपूर्ण समाज की संरचना में सहयोगी बनेंगे। वे ग्लैमर, गप्पबाजी, अश्लीलता, अपराध और हिंसा को महत्व देने के बजाए विकासात्मक समाचारों एवं गतिविधियों को उभारने पर अधिक ध्यान देंगे।

यः अपने जीवन व समाज में स्वस्थ एवं रचनात्मक परिवर्तन के लिए मीडियाकर्मियों को ब्रह्माकुमारीज जैसी संस्थाओं के दर्शन एवं कार्यक्रमों से जुड़कर समान विचारों वाले लोगों को एक मंच पर एकत्र करने का प्रयास करना चाहिए।

रः क्योंकि मीडिया किसी अन्य के प्रति नहीं बल्कि अपनी अन्तर्रात्मा एवं व्यावसायिक श्रेष्ठता के प्रति उत्तरदायी है। इसलिए उन्हें जनसाधारण एवं समाज की सेवा का संकल्प लेते हुए निरन्तर आत्मचिंतन, स्वनियंत्रण, स्वनियमन और परमात्म चिंतन को जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाना चाहिए।